39

राजा और उसके राजदूत

मत्ती 10, एक निकट दृष्टि

मत्ती की पुस्तक में राजा तथा उसके राज्य पर ज़ोर दिया गया है।[1] हमारे अध्ययन में यहां तक, मत्ती ने पूरी हुई भविष्यवाणी और सामर्थ के आश्चर्यकर्मों का वर्णन कर राजा के प्रमाण पत्र दिए हैं।

परन्तु मत्ती 9 अध्याय के अन्त में, राजा यीशु की एक आवश्यकता थी। वह, ''सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा'' (मत्ती 9:35)। उसकी सहानुभूति लोगों के लिए थी (9:36); परन्तु फिर भी खेत पके हुए थे, जबकि मजदूर थोड़े (9:37)। मसीह कटाई का काम अकेला नहीं कर सकता था; उसे सहायता की आवश्यकता थी। समाचार को फैलाने में सहायता के लिए, उसने बारह विशेष दूतों का चयन किया (10:2-4)।[2]

मत्ती का अध्याय 10 यीशु द्वारा गलील में प्रचार करने के लिए प्रेरितों को भेजने का वृज़ांत है। मूलत: इसमें उन्हें दिए गए यीशु के निर्देशों का वर्णन है (देखें मत्ती 10:5; 11:1)। उनमें से अधिकतर निर्देश उस विशेष दौरे से सम्बन्धित हैं। उदाहरण के लिए, उन बारह को केवल यहूदियों के पास जाने के लिए कहा गया, अन्यजातियों या सामरियों के पास नहीं (10:5, 6)।

करीब से देखने पर, हम पाते हैं कि प्रभु उन्हें बाद के समय अर्थात अपने स्वर्ग में लौट जाने के बाद के लिए तैयार कर रहा था, जब उन्होंने पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधियों के रूप में काम करना था। यीशु ने उनसे उसके लिए ''हाकिमों और राजाओं के सामने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिए पहुंचाए'' जाने की बात की (आयत 18)। यह इस दौरे में नहीं हुआ, जिसमें वे अन्यजातियों के पास नहीं गए थे, बल्कि भविष्यवाणी की यह बात प्रेरितों के काम में लिखित घटनाओं के समय पूरी हुई (उदाहरण के लिए, देखें 23 से 26 अध्याय)। अन्य शब्दों में प्रेरितों के लिए यीशु के निर्देश तत्काल चुनौती नहीं थे।

अध्याय 10 में हमारे लिए भी सबक है। इस प्रवचन में मैं इस अध्याय की सब बातों को शामिल नहीं कर सकता, परन्तु मैं इसमें से अतीत के राजदूतों और वर्तमान के राजदूतों पर विचार अवश्य करना चाहता हूं।

अतीत के राजदूत

आइए अतीत के राजदूतों से, जो किसी समय मसीह के विशेष दूत थे, आरम्भ करते हैं।[3] इन लोगों को ''प्रेरित'' कहा जाता था (आयत 2)। ''प्रेरित'' शब्द यूनानी शब्द का

लिप्यन्तरण है, जिसका मूल अर्थ ''भेजा हुआ'' है। इस शब्द का इस्तेमाल भेजा हुआ कहने के लिए सामान्य अर्थ में और प्रभु द्वारा भेजा हुआ कहने के लिए विशेष अर्थ में किया जाता है (2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25), परन्तु ये बारह लोग विशेष ही थे। उनमें विशेष योग्यताएं होनी आवश्यक थीं (देखें प्रेरितों 1:21, 22; 1 कुरिन्थियों 9:1; इफिसियों 4:11)। यह कोई ऐसी गद्दी नहीं थी, जो आने वाली पीढ़ियों को सौंपी जा सकती हो।[4] इन विशेष दूतों की सूची 2 से 4 पदों में दी गई है:

> बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जबदी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; फिलिप्पुस और बरतुल्मै, थोमा और महसूल लेने वाला मत्ती, हल्फै का पुत्र याकूब और तद्दै। शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

इस सूची को पढ़ने पर हमें दो तथ्य चौंका देते हैं। (1) संसार के दृष्टिकोण से ये साधारण लोग थे। इनके पास न कोई सामाजिक रुतबा था, न विशेष प्रशिक्षण और न ही विशेष योग्यता थी। वे एक असाधारण काम को करने के लिए बुलाए गए साधारण लोग थे। प्रभु किसी को भी, हर किसी को इस्तेमाल कर सकता है। (2) किसी भी दृष्टिकोण से यह एक अजीब मिश्रण था। उदाहरण के लिए, शमौन जेलोतेसी के साथ काम करने वाला मत्ती था, जो रोमियों के लिए टैक्स इकट्ठा करने का काम करता था। जेलोतेसी लोगों का यह गुट रूढ़िवादी और राष्ट्रवादी था, जिसे आतंकी गतिविधियों में महारत हासिल थी।[5] यीशु से भेंट से पहले, शमौन मत्ती को बेध सकता था–परन्तु प्रभु सब लोगों को शान्ति से रहने में सहायता कर सकता है।

क्योंकि ये लोग विशेष दूत थे, हमें मत्ती 10 अध्याय को अपने ऊपर लागू करने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इस अध्याय में इन लोगों के कई विशेष पहलुओं और उनके काम के बारे में बताया गया है।

उनके विशेष प्रमाण-पत्र (आयतें 1, 8)

प्रेरितों को विशेष प्रमाण–पत्र मिले थे (प्रेरितों 2:43; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:1–4)। उन्हें दुष्टात्माओं को निकालने, बीमारों को चंगा करने और मुर्दों को जिलाने की सामर्थ दी गई थी (मत्ती 10:1, 8)। पहली बार, यीशु ने आश्चर्यकर्म करने की अपनी शक्तियां किसी को दी थीं। परमेश्वर जब किसी को कोई काम देता है तो वह इस काम को पूरा करने के लिए आवश्यक सामान भी देता है।

मुझे और आपको उन बारह प्रेरितों वाली शक्तियां नहीं मिली हैं, परन्तु सिद्धान्त एक ही है कि प्रभु हमें दिए गए काम को पूरा करने के लिए आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध कराएगा।

उनका विशेष काम (आयतें 5–7)

प्रेरितों को विशेष काम दिया गया था, जिसे हम आम तौर पर सीमित आज्ञा या

लिमिटेड कमीशन कहते हैं। इसका क्षेत्र सीमित था: जैसा कि पहले भी बताया गया है, उन्हें न तो अन्यजातियों और न सामरियों के पास, बल्कि केवल यहूदियों के पास जाना था (आयतें 5, 6)। इसका संदेश भी सीमित था: उन्हें ''स्वर्ग का राज्य निकट आया है'' (आयत 7) का प्रचार करना था। उन्होंने लोगों को आने वाले राज्य के लिए मन फिराने को कहना था (मरकुस 6:12; देखें मत्ती 3:2; 4:17)।

हमारा काम अलग है, हम इसे ग्रेट कमीशन कहते हैं (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। इसका क्षेत्र असीमित है, ज़्योंकि हमें सारे संसार में जाने को कहा गया है (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15)। ग्रेट कमीशन का संदेश भी असीमित है, ज़्योंकि इसका भरपूरी के साथ सब लोगों में प्रचार किया जाना है। हमें सब को बताना है कि राजा यीशु आ चुका है, उसका राज्य/कलीसिया स्थापित हो चुका/चुकी है और हर कोई इसमें शामिल हो सकता है!

उन्हें विशेष निर्देश (आयतें 9-16)

प्रेरितों को विशेष निर्देश दिए गए थे: उन्हें कम सामान लेकर चलना था (मत्ती 10:9, 10) और केवल उसी घर में ठहरना था, जहां उन्हें स्वीकार किया जाता था (आयतें 11-13क)। उन्हें वहां रुककर, जहां लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते, समय बर्बाद नहीं करना था, बल्कि ठुकराए जाने पर आगे बढ़ने के लिए कहा गया था (आयतें 13ख-15)। सिखाने के लिए उन्हें बुद्धि का इस्तेमाल करना था (आयत 16ख)।

ये निर्देश विशेष तौर पर उनके लिए दिए गए थे, परन्तु मुझे और आपको भी ऐसे ही सबक लेने आवश्यक हैं। हमें यह भरोसा रखना सीखना आवश्यक है कि प्रभु हमारे लिए प्रावधान करेगा। हमें अपने कार्य को गज़्भीरता से लेना आवश्यक है। प्रभु के काम के सज़्बन्ध में निर्णय लेने के लिए हमें समझ और बुद्धि का इस्तेमाल करना आवश्यक है।

उन्हें विशेष प्रोत्साहन (आयतें 19, 20, 40-42)

अन्त में, प्रेरितों को विशेष प्रोत्साहन दिया गया था: उन्हें यह बताकर प्रोत्साहित किया गया कि उन्हें गिरज़्तार किया जाएगा, पवित्र आत्मा ने उन्हें बताना था कि उन्हें ज़्या कहना है (आयतें 19, 20)। बर्टन कॉफ़मैन ने कहा है, ''यह उस प्रेरणा की जिससे प्रेरितों को सारी सच्चाई में अगुआई मिलनी थी, नये नियम की सबसे मजबूत बातों में से एक बात यह थी।''[6] इसके विपरीत, दूसरों को ''उज़र देने के लिए'' मुझे और आपको अध्ययन करना आवश्यक है (1 पतरस 3:15)।

उन्हें मसीह के इस आश्वासन से कि उसके विशेष राजदूतों के रूप में, वे उसका प्रतिनिधित्व कर रहे थे, प्रोत्साहन दिया गया था। उसने उन्हें बताया कि उन्हें ग्रहण करने वाला उसे ही ग्रहण करता है (आयतें 40-42)।[7] किसी देश के राजा या राष्ट्रपति द्वारा कोई काम करने को कहा जाना बड़े सज़्मान की बात है। यदि यह काम ''राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु'' (प्रकाशितवाज़्य 19:16) द्वारा दिया गया हो तो और भी कितने सज़्मान की बात है!

मैं फिर से इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूं कि प्रेरित यीशु के *विशेष* दूत थे। उन्हें दिए गए विशेष निर्देश (जैसे इस बात की चिन्ता न करना कि वे ज़्या कहेंगे) हम पर लागू नहीं होते।

वर्तमान के राजदूत

इस अध्याय में हमारे लिए भी सबक हैं–सो आइए अब वर्तमान के अर्थात यीशु के प्रतिदिन के राजदूतों की बात करते हैं। मैं और आप प्रेरितों की तरह विशेष अर्थ में राजदूत नहीं हैं, परन्तु आज भी पृथ्वी पर हम प्रभु को लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं। कुरिन्थियों के नाम पत्र में पौलुस ने लिखा था:

> सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।
>
> सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो (2 कुरिन्थियों 5:17–20)।

पौलुस के शब्द मुज़्यतया अपनी ही सेवकाई के बारे में थे, परन्तु वे उस कलीसिया की ओर भी संकेत करते हैं, जिसकी ऐसी ही सेवकाई है–कि हर मसीही की लोगों को परमेश्वर से मिलाने की ज़िम्मेदारी है और यह कि ऐसा करते हुए, हम ''मसीह की ओर से'' बात करते हैं।

बहुत से पदों में यह ज़ोर दिया गया है कि विश्वासी मसीही आज पृथ्वी पर यीशु के प्रतिनिधि हैं; नया नियम सिखाता है कि मसीह और उसके विश्वासी अनुयायियों को अलग करना सम्भव है। जब कोई किसी को यीशु का चेला होने के कारण ठण्डे पानी का गिलास पिलाता है, तो वास्तव में वह यीशु की ही सेवा कर रहा होता है (मत्ती 10:42; देखें 25:35, 40)। जब शाऊल कलीसिया के सदस्यों को सता रहा था (प्रेरितों 8:3), तो वास्तव में वह मसीह को ही सता रहा था (प्रेरितों 9:4)।

हमें उसकी देह (1 कुरिन्थियों 12:13) अर्थात कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया है, जिसे उसकी ''परिपूर्णता'' (इफिसियों 1:22, 23) कहा गया है। बपतिस्मा लेने पर, हम प्रभु को ''पहन लेते'' हैं (देखें गलातियों 3:27)। हम यीशु में हैं और वह हम में है (रोमियों 8:1; कुलुस्सियों 1:27)। हम में से हर कोई कह सकता है, ''... अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20)।

विलियम बार्कले ने लिखा है, ''मसीही व्यक्ति लोगों के लिए यीशु मसीह का राजदूत है। मसीह की उपस्थिति से, वह अपने साथ वचन और अपने प्रभु की सुन्दरता लेकर जाता

है।''[8] जैसे पहले भी कहा गया था, हमें अपना काम करना है: प्रभु के प्रतिनिधियों के रूप में संसार में जाकर सब लोगों में उसका संदेश पहुंचाना है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। इसे मन में रखते हुए, आइए हम अपने बाइबल पाठ में चलते हैं और उसमें से उन सामान्य सच्चाइयों को लेते हैं, जो मसीह के सभी वर्तमान राजदूतों पर लागू होती हैं।

जीने के लिए एक जीवन (आयतें 28, 32, 33, 37-39)

मसीह के राजदूतों के रूप में, हमारा जीवन विशेष तरह का होना चाहिए। याद रखें, हम राजा के प्रतिनिधि हैं!

इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे जीवन में *परमेश्वर का भय* दिखाई देना चाहिए। यीशु ने कहा, ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना। पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है'' (मत्ती 10:28)।

इससे *प्रभु का प्रचार करने की दृढ़ता* आनी आवश्यक है। मसीह ने कहा, ''जो कोई मुनष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इनकार करेगा, उसका मैं ज़ी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इनकार करूंगा'' (आयतें 32, 33)। हमें उसकी बात माननी आवश्यक है। बार्कले का सुझाव है कि ''लोगों का यीशु मसीह का इनकार करने का अधिक कारण विवेकशील बातों के बजाय कायरतापूर्ण चुप्पी है।''[9] हमें कामों से भी उसे स्वीकार करना आवश्यक है (देखें तीतुस 1:16)। अमेरिका के राष्ट्रपति की अपनी कोई गुप्त सेवा हो सकती है,[10] परन्तु यीशु की कोई ऐसी सेवा नहीं है। आपको और मुझे लोगों के सामने यह मानना आवश्यक है कि हम अपने राजा के सेवक हैं!

यह जीवन *सही प्राथमिकताओं* द्वारा दिखाया गया होना चाहिए। सबसे ऊपर परमेश्वर, यीशु और राज्य को स्थान मिलना चाहिए। हमारे परिवारों से भी अधिक महत्वपूर्ण और कई बातें हैं। यीशु ने कहा, ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं'' (आयत 37)।[11] प्रभु के राज्य का महत्व हमारे अपने जीवनों से अधिक है। फिर, मसीह ने कहा कि ''जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा'' (आयत 39ख)। इस प्रतिज्ञा में आरज़िभक मसीहियों को रोमी सताव का सामना करने के लिए कितनी बड़ी सांत्वना दी गई है!

अपना इनकार करके ऐसा जीवन बिताना आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं'' (आयत 38)। मत्ती की पुस्तक में यहां क्रूस का उल्लेख पहली बार है। बाद में यीशु ने ''अपना क्रूस लिया।'' हमें उसके पीछे चलने को तैयार होना आवश्यक है।

सहने के लिए सताव (आयतें 16-18, 21, 22, 34-36)

मसीह के राजदूत होने के कारण, हम सताव सहने की उज़्मीद कर सकते हैं। यीशु ने

अपने चेलों को बताया, ''देखो, मैं तुझ़्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं'' (आयत 16क)। यह अजीब लग सकता है, ज़्योंकि मसीह राजाओं का राजा है, परन्तु इतिहास अधिकार के विरुद्ध विद्रोह की बातों से भरा पड़ा है। यदि उन्होंने उसे सताया (आयत 25), तो उसके अनुयायियों को ज़्यों नहीं सताएंगे (आयत 24)?

इस अध्याय में तीन तरह के सताव की बात कही गई है। पहला उस समय के संगठित धर्म की ओर से सताव: ''परन्तु लोगों से सावधान रहो। ज़्योंकि वे तुझ़्हें महासभाओं में सौंपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुझ़्हें कोड़े मारेंगे'' (आयत 17)। आज संसार के कुछ भागों के मसीही लोग समझ सकते हैं कि संगठित धर्म द्वारा सताए जाने का ज़्या अर्थ है।

दूसरा सताव सरकारी अधिकारियों की ओर से है: ''तुम ... हाकिमों और राजाओं के साज़्हने ... पहुंचाए जाओगे'' (आयत 18)। हमें तुरन्त पौलुस के सताव और आरज़्भिक शहीदों का ध्यान आता है। फिर, आज के हमारे कुछ भाइयों पर जो बीतता है और जो बीत रहा है, ऐसा ही सताव तो है।[12]

तीसरी तरह का सताव अप्रत्याशित लोगों अर्थात परिवार की ओर से है।[13]

> भाई-भाई को और पिता पुत्र को घात के लिए सौंपेंगे, और लड़के बाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे (आयत 21)।

> यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं। मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं। मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे (आयतें 34-36)।

यीशु ने अपने अनुयायियों को साफ़ बता दिया कि ''मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे'' (आयत 22क)। वह उनके साथ पूरी ईमानदारी से काम कर रहा था। उसने उन्हें काम समझाया और फिर, वास्तव में यह पूछा कि ''ज़्या तुझ़्हें काम चाहिए?''

जब नया नियम सताव के बारे में इतना कुछ कहता है तो हम इसके बारे में इतना कम ज़्यों बताते हैं?[14] आरज़्भिक कलीसिया के लोग जब आपस में मिलते थे, तो वे प्रभु के लिए उनके सामने आने वाले खतरों की बातें किया करते थे। हम में से कुछ लोग बहुत अधिक व्यस्त होने, बहुत अधिक थके होने, बहुत गर्मी होने या बहुत सर्दी होने की शिकायत करते हैं। उन्होंने सताव सहा, जबकि हम थोड़ी सी भी कठिनाई नहीं सहना चाहते। ''ज़्या यीशु को अकेले ही क्रूस उठाना चाहिए?''

कहां से उज़्मीद की जाए (आयतें 26-31)

मैं यह प्रभाव नहीं देना चाहता कि मज़ी 10 अध्याय में मसीह की सब बातें नकारात्मक ही थीं। सिज़्के का दूसरा पहलू भी था। यीशु के ''राजदूतों'' के रूप में, हमें राजा की ओर से सामर्थ और उसका इस्तेमाल करने की शज़्ति मिली है।

इस अध्याय में तीन बार, प्रभु ने अपने चेलों को न डरने के लिए कहा: बदनामी से न डरो, ज़्योंकि अन्त में, जीत सच्चाई की ही होगी: ''सो उन से मत डरना, ज़्योंकि कुछ ढंपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा'' (आयत 26)। सुसमाचार का ''छतों पर से प्रचार'' (आयत 27) किया जाएगा।[15]

जब आप का जीवन खतरे में पड़ जाए तो न डरो, ज़्योंकि मनुष्य केवल शरीर को ही मार सकते हैं: ''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना। पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है'' (आयत 28)। किसी ने लिखा है, ''हे पवित्र लोगो, उससे डरो, फिर तुम्हें किसी और से डरने की आवश्यकता नहीं होगी।'' जॉन नौक्स के शरीर को दफ़नाते समय कहा गया, ''यहां वह आदमी है जो परमेश्वर से इतना डरता था कि वह कभी किसी मनुष्य का सामना करने से नहीं डरा।''[16]

मत डरो, ज़्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हारी ओर है!

> ''ज़्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं?[17] तौ भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिए, डरो नहीं! तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो'' (आयतें 29-31)।

सारांश

जो चुनौती यीशु ने अपने प्रेरितों की दी-जो चुनौती उसने हमें दी-उसे आयत 39 में संक्षिप्त किया गया है: ''जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।'' आरम्भिक शताब्दियों के लेखक हमें बताते हैं कि आरम्भिक शहीदों ने अपने होंठों पर इसी आयत के साथ आग की लपटों या जंगली जानवरों का सामना किया था: ''जो मेरे कारण अपने प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।''

मत्ती 10:39 केवल शहीदों के लिए ही नहीं है। यह हम में से हर एक के लिए है। नये नियम में प्रभु की बार-बार कही गई बातें लिखी गई हैं। यह बात सुसमाचार के वृत्तांतों में छह बार मिलती है। (पांच अन्य स्थान मत्ती 16:25; मरकुस 8:35; लूका 9:24; 17:33; यूहन्ना 12:25 हैं।) यीशु हमें उसकी सेवा में अपने जीवनों के होने का महत्व सिखाना चाहता था। ''जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है वह उसे पाएगा।''

यदि आप उसकी बुलाहट और उसके काम को नज़रअन्दाज कर रहे हैं और स्वार्थपूर्ण ढंग से केवल अपने लिए अपने जीवन का इस्तेमाल कर रहे हैं, तो आप इसे खो देंगे। आप अपने जीवन का ज़्या *करेंगे?* निर्णय लेने का दिन आज ही है।[18]

टिप्पणियां

[1]''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 9 से ''सुसमाचार के चार वृज़ांत'' और पृष्ठ 21 से आरज़्भ होने वाले ''मज़ी की पुस्तक'' पाठ देखें। [2]प्रेरितों के चयन के बारे में हमने ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में ''तूफ़ान को शान्त करना'' पाठ में अध्ययन किया था। [3]इफिसियों 6:19 में पौलुस ने अपने आप को ''ज़ंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत'' कहा। ''राजदूत'' शज़्द ''बूढ़ा'' या ''बुज़ुर्ग'' के लिए शज़्द के रूप से लिया गया है। उस समय के सांसारिक राजदूत आम तौर पर बूढ़े लोग ही होते थे। बहुत से टीकाकारों का मानना है कि फिलेमोन 9 में ''बूढ़े'' शज़्द का अनुवाद ''राजदूत'' होना चाहिए। यदि पौलुस ''एक राजदूत'' था, तो दूसरे प्रेरित भी राजदूत ही थे। मज़ी 10 इस बात पर ज़ोर देता है कि प्रेरित यीशु के *प्रतिनिधि* थे। राजदूत का मुज़्य कार्य अपने भेजने वाले का प्रतिनिधित्व करना होता है। [4]प्रेरितों पर यह जानकारी अध्ययन की इस शृंखला में पहले ही दी जा चुकी है, इसलिए इसे दोहराने का कोई लाभ नहीं होगा। [5]जेलोतेसियों का उल्लेख ''मसीह का जीवन, भाग 1'' पुस्तक में पृष्ठ 64 से आरज़्भ होने वाले ''संसार जिसमें मसीह आया'' नामक पाठ में यीशु के समय पाए जाने वाले ''अन्य गुट'' के साथ किया गया है। [6]जेज़्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन मैथ्यू* (ऑस्टिन, टैज़्सस: फर्म फाउंडेशन पज़्लिशिंग हाउस, 1968), 137. [7]यूहन्ना 13:20 भी देखें। कुछ लोग यह शिक्षा देते हैं कि जो कुछ यीशु ने नये नियम में कहा, उसका महत्व प्रेरितों द्वारा लिखी या कही गई बातों से अधिक है। मज़ी 10:42 और यूहन्ना 13:20 यह सुझाव देते हैं कि हमें प्रेरितों की शिक्षा को यीशु की शिक्षा के रूप में ही मानना चाहिए। यदि हम प्रेरितों को स्वीकार करते हैं, तो हम मसीह को स्वीकार कर रहे हैं। दूसरी ओर, यदि हम उन्हें (और उनकी शिक्षा को) ठुकराते हैं तो हम मसीह को ठुकरा रहे हैं। [8]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल ऑफ मैथ्यू,* अंक 1, संशो. संस्क., द डेली बाइबल स्टडी सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 361. [9]वहीं, 392. [10]यू.एस. सीक्रेट सर्विस अमेरिका के डिपार्टमैंट ऑफ़ ट्रयरी की एक एजेन्सी है। अन्य कामों के अलावा, इस सर्विस का काम राष्ट्रपति और उसके परिवार की सुरक्षा करना है।

[11]मज़ी 10:37 और इसके अर्थों पर संक्षेप में चर्चा के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में पृष्ठ 160 से आरज़्भ होने वाले ''हमारे दो परिवार'' देखें। [12]अमेरिका में, जहां लोगों पर सरकार द्वारा सताव नहीं होता है, मैं इसे सामान्यतया समाज द्वारा किए जाने वाले सताव के लिए लागू करूंगा। [13]34 से 36 आयतों पर संक्षिप्त चर्चा के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 2'' पुस्तक में पृष्ठ 160 से आरज़्भ होने वाले ''हमारे दो परिवार'' पाठ देखें। [14]देखें रोमियों 8:14-17; फिलिप्पियों 1:27-30; 1 पतरस 2:18-21; 5:8, 9; 2 तीमुथियुस 3:10-12. [15]ज़्लेबर्न, टैज़्सस में द नॉर्थ एंजलिंग सेंट चर्च ऑफ़ क्राइस्ट की छत एक तरह से नीची और चौरस थी। वे उस छत का इस्तेमाल प्रचारक के लिए करके सुसमाचार सुनने वालों के लिए पार्किंग में कुर्सियां लगाकर करते थे। [16]बार्कले, 386. [17]यूनानी शज़्द का अनुवाद ''पैसा'' तांबे के सबसे छोटे रोमी सिज़्के के लिए किया गया था। यह दीनार का (जो एक दिन की मज़दूरी थी) लगभग पन्द्रहवां भाग होगा। [18]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए आपको चाहिए कि अपने सुनने वालों को प्रभु के पास आने (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:37, 38) और यदि वे भटक गए हैं तो प्रभु के पास वापस आने का ढंग बताएं (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।